आज की अव्यक्त मुरली के मुख्य पॉइन्टस ---------- Date: 06-07-2014

बापदादा ने बताया की कोन आदि रतन बच्चे हैं जो सारे कल्प में ब्रह्मा बाबा के साथी बनेंगे.

जो आदि से अन्त तक बापदादा के सदा फेथफुल, सदा बाप के कदमों में कदम रखने वाले, सदा के सहयोगी और साथी हैं. हर समय बाप और सेवा में मगन रहने वाले, सदा श्रेष्ठ मर्यादाओं की लकीर से संकल्प में भी बहार न निकलने वाले मर्यादा पुरूषोतम, ऐसे जो बच्चे सदा हर सेकण्ड हर कर्म में साथ निभाऊं, ऐसे बच्चों को बाप भी जन्म-जन्मांतर साथी भव का वरदान अभी देते हैं.

बापदादा ने आगे कहा, अभी सब महारथी बच्चे अपने में चेक करें कि वर्तमान समय बापदादा के गुणों, नॉलेज और सेवा में समानता और साथीपन कहा तक हैं?

जितनी बच्चों में अभी समानता होगी उतनी समीपता ब्रह्मा बाप के साथ पूरे कल्प में होगी. अभी की स्टेज (अवस्था) और भविष्य स्टेज में और हर सेकण्ड साथीपन का अनुभव जन्म-जन्मांतर भी नाम रूप सम्बन्ध से साथ के अनुभव के निमित बनेंगे. जितना अभी संगम पर साथ निभाने में संपूर्ण हैं उतना ही समीप के सम्बन्धी बनने में भी समीप होंगे.

विश्व की नम्बरवन श्रेष्ठ आत्मा का भी ड्रामा के अन्दर महत्व हैं. ऐसे नम्बरवन आत्मा के सदा सम्बन्ध में रहने वाली आत्माओं का भी महत्व हो जाता हैं. तो सदा काल की श्रेष्ठ आत्मा (शिवबाबा) के सम्बन्ध में आने वाली आत्माओं का महत्व कितना ऊंचा होगा.

बापदादा ने हम बच्चों को स्वयं में चेक करने को कहा. ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें अपने को समझते हो? जितने आप बाप (शिवबाबा) के गुण गाते हो उतना ही रिटर्न में ऐसी आत्माओं गुणगान करेंगे. अभी क्यों नहीं गुणगान करते हैं? सेवा अभी करते हो लेकिन संपूर्ण फल अन्त में क्यों मिलता हैं?

उसका कारण बताते हुए बापदादा ने कहा, अभी कभी-कभी बाप और आपको कहीं मिक्स कर देते हो. बाप के गुण गाते-गाते अपने आपके भी गुण गाना शुरु कर देते हो. भाषा बड़ी मीठी बोलते हो लेकिन मैं-पन का भाव होने के कारण आत्माओं की भावना समाप्त हो जाती हैं.

मैं-पन का त्याग ही सबसे बड़ा अति सूक्ष्म त्याग हैं. इसी त्याग के आधार पर नम्बरवन आत्मा ने नम्बरवन भाग्य बनाया और अष्ट रत्न नम्बर का आधार भी यही त्याग हैं. हर सेकण्ड, हर संकल्प में बाबा-बाबा याद रहे, मैं-पन समाप्त हो जाए.

जब मैं नहीं तो मेरा भी नहीं. मेरा स्वभाव, मेरे संस्कार, मेरी नेचर, मेरा काम या ड्युटी, मेरा नाम, मेरी शान, मैं-पन के साथ यह मेरा-मेरा भी समाप्त हो जाता हैं.

मैं-पन और मेरा-पन समाप्त हुआ - यही समानता और सम्पूर्णता हैं.

आज की मुरली का सार हैं - ब्रह्मा बाप का जन्म-जन्मांतर साथी बनना हो तो ब्रह्मा बाबा के जो गुण हैं वह हमारे में धारण करो. ब्रह्मा बाबा का सबसे महान गुण हैं कि इस यज्ञ के सबसे वरिष्ठ होते भी कोई भी बात में मैं-पन नहीं था. इसका एक एक्जाम्पल हैं जब यज्ञ में पैसे आने लगे और बड़े-बड़े मकान बने तो भी बाबा तो अपनी छोटी सी कुटिया (झोपडी) में ही रहते थे. कभी उनको अंश-मात्र भी संकल्प नहीं आया की यह सब मेरी मेहनत और मेरे त्याग से तो बने हैं - तो मैं क्यों न रहूँ? नहीं. ब्रह्मा बाबा ने कहा यह मकान सब आने वाले बच्चों के लिए हैं.

ब्रह्मा बाबा का सबसे बड़ा गुण मैं-पन का त्याग ही था उसकी बदौलत आज वह आत्मा सबसे नम्बरवन बन गई.

इसे समझकर हमारे मुख से यही निकलता, वाह ब्रह्मा बाबा वाह और ऐसा बनाने वाले शुक्रिया मेरे शिवबाबा तेरा लाख-लाख शुक्रिया.

ॐ शांति.